ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print): 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 4, Issue 8, August 2015

बलरामपुर जनपद में जलजमाव एवं बाढ़ की व्यवस्था (एक भौगोलिक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन)

डॉ सर्वेश्वर नाथ सिंह

एसोसिएट प्रोफेसर, भूगोल, एम. एल. के. पी जी कॉलेज बलरामपुर (यू.पी.)

यूपी के बलरामपुर (Balrampur) में राप्ती नदी (Rapti River) खतरे के निशान से नीचे पहुंच गई है लेकिन जिले में बाढ़ की विभिषिका खत्म होने का नाम नहीं ले रही. जिले में करीब 150 से अधिक गांवों में बाढ़ का पानी भरा है. किसानों की सैकड़ों हेक्टेअर फसलें बर्बाद हो चुकी हैं. राप्ती नदी व पहाड़ी नालों के तटवर्ती किसानों के खेतों को बाढ़ ने अपनी आगोश में ले लिया है. प्रशासन द्वारा किये गये राहत और बचाव के इंतेजाम नाकाफी नजर आ रहे हैं. मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ (CM Yogi Aadityanath) शुक्रवार को बाढ़ प्रभावित जिलों (flood affected districts) का दौरे पर हैं. इस दौरान सीएम योगी गोंडा, बहराइच, बलरामपुर जिले में प्रभावित क्षेत्रों का निरीक्षण करेंगे. बहराइच में बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों के दौरे पर सीएम योगी, पीड़ितों से करेंगे मुलाकात, बांटेंगे राहत सामग्री किसानों पर आफत बनकर टूट रही बारिश बलरामपुर में बाढ़ से हालात बद से बदतर होते नजर आ रहे हैं. जिस बारिश का कभी किसानों को इंतजार हुआ करता था आज वह बारिश किसानों पर आफत बनकर टूट रही है. जिले के तराई क्षेत्र में बाढ़ का खासा कहर देखने को मिल रहा है. तराई क्षेत्र में पहाड़ी नालों की भरमार है जो नेपाल से राप्ती नदी में मिलते हैं. इन नालों से आया पानी अब गांव में घुस चुका है. जिससे ग्रामीणों का जनजीवन अस्त व्यस्त हो चुका है. जिम्मेदार अधिकारी लगातार हर संभव मदद का भरोसा देते नजर आ रहे हैं लेकिन ग्रामीणों को किसी तरह की कोई मदद नहीं मिल पा रही है.[1]

जयरामपुर खादर को जाने वाला मार्ग कटा, कई गांव प्रभावित

हरैया सतघरवा क्षेत्र के चैधरीडीह से जयरामपुर खादर को जाने वाला मार्ग कट चुका है. यहां बने मुख्य पुल का अप्रोच ही पहाड़ी नाले में आई बाढ़ से कट गया जिससे जंगल से सटे अंतिम गांव जयराम खादर का सम्पर्क टूट गया. यहां पर भी राहत सुविधाएं नहीं पहुंच पा रहीं. इस रास्ते के बंद हो जाने से जारामपुर खादर, चैधरीडीह, झरियाडीह, शिकारी पुरवा सहित कई गांव के लोग प्रभावित हैं. विकासखंड तुलसीपुर के रामगढ़ मैटाहवा गांव इस समय पूरी तरह से जलमग्न हो चुका है.

बाढ़ के कारण पूरा गांव जलमग्न

खरझार नाले पर बने तटबंध में दरार के कारण पूरा गांव अब जलमग्न हो गया है. लोग किसी तरह भीषण गंदगी और मिट्टी पानी के बीच खाने और रहने को मजबूर हैं. बांध में दरार आने से विजईडीह, लोहेपनिया, साहेब नगर, शांति पुरवा, सुगानगर, बहेड़ी आदि गांवो में पानी घुस चुका है जिससे हालात बेहद खराब हैं.

बाढ़ से हालात बेकाबू

जिले में बाढ़ से हालात बेकाबू होते नजर आ रहे हैं. प्रशासनिक आंकड़ों की मानें तो जिले की करीब 76 हजार की आबादी बाढ़ से प्रभावित है. बलरामपुर, तुलसीपुर और उतरौला तीन तहसील क्षेत्रों में 90 नावों का संचालन किया जा रहा है. 31 बाढ़ चैकियां व 18 बाढ़ राहत केन्द्र बनाए गए हैं और प्रशासनिक अधिकारी गांवों में पहुंचकर राहत सामग्री का वितरण कर रहे हैं.[2]

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print): 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 4, Issue 8, August 2015

Balrampur Rapti River Flood: उत्तर प्रदेश (Uttar Pradesh) के बलरामपुर (Balrampur) जिले में राप्ती नदी (Rapti River) चेतावनी बिंदु से 20 सेंटीमीटर ऊपर बह रही है. इस बीच सदर तहसील क्षेत्र में विधायक पल्टूराम बाइक से गांवों में पहुंचकर लोगों की समस्याएं सुनकर राहत पहुंचाने का काम कर रहे हैं. करीब 150 गांव (Village) राप्ती के पानी से घिरे हुए हैं. 24 गांवों में पानी 3 से 4 फीट तक भर चुका है. तटवर्ती गांवों में राप्ती नदी एक दर्जन से अधिक गांवों में कटान कर रही है. अब तक किसानों (Farmers) की सैकड़ों हेक्टेअर फसल (Crop) नदी में समा चुकी है. गांव के लोग घर छोड़कर सुरक्षित स्थानों पर जाने को मजबूर हैं.

तटबंध टूटने का खतरा

रास्तों पर अधिक पानी का बहाव होने के कारण आवागमन बंद हो चुका है. अधिकतर गांवों में अभी तक राहत सामग्री नहीं पहुंच पाई है. हालांकि, नदी जलस्तर में गिरावट दर्ज की जा रही है लेकिन बाढ़ वाले क्षेत्रों में खतरा और बढ़ता जा रहा है. राप्ती नदी के किनारे बनाए गए तटबंध कई जगह से क्षतिग्रस्त हो गए हैं. कुछ स्थानों पर राप्ती नदी ने अपना रास्ता मोड़ लिया है और तटबंध के काफी नजदीक से गुजरने लगी है जिससे वहां तटबंध टूटने का खतरा मंडराने लगा है. तटबंधों को बचाने की कवायद में सिंचाई विभाग के अधिकारी जुटे हैं.

ग्रामीणों को भुगतना पड़ता है खामियाजा

ग्रामीणों का कहना है कि समय से बचाव कार्य नहीं किया जाता है तो खामियाजा हजारों ग्रामीणों को भुगतना पड़ता है. राप्ती नदी के किनारे बने चंदापुर बांध पर पहुंचकर सदर विधायक पल्टूराम ने लोगों की समस्याएं सुनी और उसे दूर करने का भरोसा दिलाया. विधायक ने कहा कि आने वाले समय में गांवों को बचाने के लिए स्थाई निराकरण कराने का प्रयास किया जाएगा. उन्होंने तटबंधों की दशा के लिए पूर्व की सरकारों को जिम्मेदार ठहराया. [3]
बलरामपुर में राप्ती नदी का रौद्र रूप दिखाई पड़ रहा है. महरी गांव को कटान से रोकने के लिए बनाए गए तटबंध को राप्ती नदी ने अपने आगोश में ले लिया है. वर्षा ऋतु के पूर्व 3 करोड़ 18 लाख रुपये की लागत से महरी गांव को कटान से बचाने के लिए यह प्रोजेक्ट तैयार किया गया था. राप्ती नदी में आई पहली बाढ ने ही सिंचाई विभाग में व्याप्त भ्रष्टाचार की पोल खोल दी है.

महरी गांव को कटान से बचाने के लिए जो प्रोजेक्ट तैयार किया गया था

वह पूरी तरह नाकाम साबित हो गया. कटान निरोधक प्रोजेक्ट में बोल्डर पिचिंग, जियो बैग, ईसी बैग और परक्यूपाइन का उपयोग करते हुए नदी की कटान को रोकना था. इस प्रोजेक्ट के तहत वर्षा ऋतु के पूर्व ही नदी के नीचे दो मीटर की गहराई से पिचिंग करते हुए तटबंध बनाना और गाइड बंध का निर्माण करना था, लेकिन गाइड बंध बनाया ही नहीं गया. मानक के अनुरूप कार्य न किए जाने से राप्ती नदी के तेज प्रवाह ने पूरे तटबंध को देखते ही देखते अपने आगोश में ले लिया. नतीजा है कि महरी गांव और आसपास के आधा दर्जन गांव में बाढ़ का पानी घुस गया है.

महरी गांव के अतिरिक्त भोजपुर, वीरपुर कला, कुल्हुइयां और किठूरा सहित कई गांवों में पानी भर गया है. लोगों की दुश्वारियां बढ़ने के साथ ही महरी गांव के अस्तित्व को बचाए रखना भी बड़ी चुनौती बन गई है. सिंचाई विभाग बाढ़ खंड के अधिशासी अभियंता जेके लाल ने बताया की महरी गांव पर कटान निरोधक कार्य की परियोजना प्रगति पर था, जिसकी लागत 3 करोड़ 18 लाख रुपये है. अधिशासी अभियंता ने बताया की इस परियोजना का 70% कार्य पूरा किया जा चुका था. उन्होंने बताया कि इस परियोजना के अंतर्गत 380 मीटर लंबाई में स्टोन बोल्डर से लांचिंग अप्रन के साथ स्लोप पिचिंग का कार्य किया जा रहा था. इस परियोजना का 70% पूर्ण हो चुका कार्य अब राप्ती नदी के आगोश में समाहित हो चुका है. ऐसे में यह परियोजना पूरी तरह असफल हो चुकी है.
गैसड़ी क्षेत्र से बीजेपी विधायक शैलेश कुमार सिंह शैलू ने तटबंध कटने के बाद मुख्यमंत्री को संबोधित एक पत्र लिखा है, जिसमें बाढ़ खंड में व्याप्त भ्रष्टाचार की शिकायत करते हुए इसकी जांच कराए जाने की मांग की है.[4]

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print): 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 4, Issue 8, August 2015

संदर्भ

1. "Uttar Pradesh in Statistics," Kripa Shankar, APH Publishing, 1987, ISBN 9788170240716
2. ↑ "Political Process in Uttar Pradesh: Identity, Economic Reforms, and Governance Archived 2017-04-23 at the Wayback Machine," Sudha Pai (editor), Centre for Political Studies, Jawaharlal Nehru University, Pearson Education India, 2007, ISBN 9788131707975
3. "Uttar Pradesh in Statistics," Kripa Shankar, APH Publishing, 1987, ISBN 9788170240716
4. ↑ "Political Process in Uttar Pradesh: Identity, Economic Reforms, and Governance Archived 2017-04-23 at the Wayback Machine," Sudha Pai (editor), Centre for Political Studies, Jawaharlal Nehru University, Pearson Education India, 2007, ISBN 9788131707975